संवाद पत्र पूर्वोत्तर सीमा रेल निर्माण संगठन

अंक 11 वर्ग : तृतीय त्रैमासिक जुलाई, 2009

रेल सप्ताह समारोह 2009

पुरस्कार प्रदान करते हुए श्री शिव कुमार, महाप्रबंधक/नि.

दिनांक 09.04.2009 को रेल सप्ताह समारोह का आयोजन ओपन लाइन के साथ संयुक्त रूप से किया गया, जिसका शुभारंभ दोनों महाप्रबंधकों ने द्वीप प्रज्ज्वलित कर किया । श्री शिव कुमार, महाप्रबंधक/निर्माण ने अपने वक्तव्य में वर्ष 2008-09 के दौरान संगठन द्वारा निष्पादित निर्माण कार्यों ,उपलब्धियों, चालू परियोजनाओं एवं भविष्य में किये जाने वाले निर्माण कार्यों से उपस्थित अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिजनों को अवगत कराया । समारोह में वर्ष 2008-09 के दौरान उत्कृष्ट सेवा के लिए कुल 44 व्यक्तिगत पुरस्कार, 2 सामूहिक पुरस्कार तथा दक्षता शील्ड अधिकारियों एवं कर्मचारियों में वितरित किए गए ।

रंगाली बिहु समारोह

समारोह में श्री शिव कुमार, महाप्रबंधक/नि.

गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी मालीगांव रेलवे स्टेडियम में रंगाली बिहु हर्षोल्लास के साथ मनाया गया । दिनांक 14.04.09 को समारोह का शुभारंभ असम साहित्य सभा के पूर्व अध्यक्ष, श्री अरूण शर्मा ने किया । श्री शिव कुमार, महाप्रबंधक/निर्माण इस समारोह के मुख्य अतिथि रहे । इस अवसर पर बिहु नृत्य के अलावा असम के विभिन्न समुदायों ने अपने-अपने लोक नृत्य प्रस्तुत किये ।

रेल संरक्षा आयुक्त का निरीक्षण

रेल संरक्षा आयुक्त ने 28 अप्रैल,2009 को बोगीबिल पुल परियोजना के अन्तर्गत ब्रह्मपुत्र नदी के दक्षिणी किनारे पर मौजूदा चाउलखोवा-मोरानहाट स्टेशनों के बीच 44.00 कि.मी. नई बड़ी

रेल संरक्षा आयुक्त के साथ श्री राधे श्याम, मु.प्र.अधि./नि.

लाइन का निरीक्षण किया तद्पश्चात उन्होंने 60 कि.मी. प्रति घंटा की अधिकतम गति पर यात्री यातायात के लिए सेक्शन खोलने की अनुमति प्रदान की। धमालगांव जं. होकर मोरानहाट से चाउलखोवा तक नई लाइन के अंतर्गत बना नया डिब्रूगढ़ स्टेशन, गुवाहाटी-डिब्रूगढ़ रेल मार्ग पर और भी सुगमता प्रदान करेगा तथा इस लाइन से निर्माणाधीन बोगीबिल के मुख्य पुल की अधिसंरचना के लिए निर्माण सामग्रियों को देश के अन्य हिस्सों से आवागमन में अत्यधिक मदद मिलेगी । इस परियोजना के पूरा होने से ऊपरी असम विशेषकर अरूणाचल प्रदेश के लोगों को गुवाहाटी एवं देश के अन्य हिस्से से सम्पर्क स्थापित करने में अत्यंत सुगमता होगी।

स्वास्थ्य जांच शिविर

स्वास्थ्य जांच शिविर में महाप्रबंधक/नि.

निर्माण संगठन में दिनांक 30.04.09 को अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए पहली बार एक स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन किया गया । उक्त शिविर में अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने पूर्ण सहयोग प्रदान किया तथा अपनी स्वास्थ्य जाँच करवायी । उन्हें स्वास्थ्य के अलावा खान-पान संबंधी सुझाव भी दिए गए ताकि वे अपने जीवन को और अधिक बेहतर ढंग से जी सकें ।

संरक्षक
श्री शिव कुमार
महाप्रबंधक/निर्माण

मुख्य संपादक
श्री बकरीदन
मुख्य राजभाषा अधिकारी/नि

संपादक
श्री अजय प्रधान
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी/नि

सहयोग
श्री शरद विधु शुक्ल
राजभाषा अधिकारी/नि

लम्बी मेहराब वाले पुलों पर तकनीकी प्रस्तुतीकरण

तकनीकी प्रस्तुतीकरण में श्री शिव कुमार, महाप्रबंधक/नि. श्री राधे श्याम, मु.प्र.अधि./नि तथा अन्य अधिकारीगण

दिनांक 09.06.09 को मेसर्स एस.टी.यू.पी. कंसल्टेन्ट्स के विशेषज्ञ दल ने पू. सी. रेल (निर्माण) मुख्यालय में लम्बी मेहराब वाले पुलों पर एक तकनीकी प्रस्तुतीकरण प्रस्तुत किया । तकनीकी प्रस्तुतीकरण में विश्व में निर्मित/निर्माणाधीन लम्बी मेहराब वाले पुलों एवं लम्बी मेहराब वाले पुलों के निर्माण का विकास समाहित था। उक्त तकनीकी प्रस्तुतीकरण में महाप्रबंधक/निर्माण, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण, संगठन के मुख्य इंजीनियरों तथा पू.सी. रेल निर्माण के अभिकल्प विभाग के अधिकारीगण सम्मिलित हुए । एस.टी.यू.पी. कंसल्टेन्ट्स के दल में श्री एस. डी. लिमए श्री ए. घोषाल, श्री डी. के. गुप्ता एवं श्री पी. सी. बोरा शामिल थे ।

निर्माण संगठन को प्राप्त पुरस्कार राशि का वितरण

पूर्वोत्तर सीमा रेल/निर्माण संगठन की उपलब्धियों पर सराहना और पुरस्कार मिलने में संगठन के हर अधिकारी एवं कर्मचारी की अहम भूमिका है और सब के प्रयासों से ही यह संगठन उत्तरोत्तर अपने लक्ष्यों को प्राप्त करता जा रहा है । संगठन को फरवरी, 2009 तक प्राप्त कुल 19 लाख 25 हजार रू. की पुरस्कार राशि का वितरण अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बीच समान रूप से जून माह के वेतन के साथ 805 रू. प्रति व्यक्ति वितरित किया गया ।

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की दूसरी बैठक

बैठक का एक दृश्य

श्री शिव कुमार महाप्रबंधक/निर्माण की अध्यक्षता में दिनांक 25.06.09 को वर्ष की दूसरी राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें राजभाषा के प्रचार-प्रसार से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर विचार-विमर्श हुआ । रेलवे बोर्ड द्वारा नामित प्रेक्षक श्री हामिद अली भी उक्त बैठक में उपस्थित हुए एवं राजभाषा विभाग द्वारा किये गये प्रयासों की सराहना करते हुए इसके प्रचार-प्रसार के लिए अपने सुझाव दिए ।

अधिकारियों के लिए कम्प्यूटर कुंजीयन कार्यशाला

कार्यशाला में श्री राधे श्याम,मु.प्र.अधि.नि. एवं अन्य अधिकारीगण

रेलवे बोर्ड के निदेशानुसार इस संगठन के उच्चाधिकारियों के लिए एक तीन दिवसीय देवानगरी कम्प्यूटर कुंजीयन कार्यशाला का आयोजन किया गया । दिनांक 13.05.09 से 15.05.09 तक आयोजित इस कार्यशाला में संगठन के अधिकारियों ने पूर्ण उत्साह के साथ भाग लिए ।

सेवानिवृत्ति समारोह

सेवानिवृत्त कर्मचारियों के साथ श्री शिव कुमार, महाप्रबंधक/नि., श्री राधे श्याम, मु.प्र.अधि./नि., श्री अकलीवन, भंडार नियंत्रक/नि. एवं अन्य अधिकारीगण

इस संगठन की परिपाटी को कायम रखते हुए माह के अंतिम दिन सेवानिवृत्त हुए अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए विदाई समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें कर्मचारियों को उनकी सेवानिवृत्ति भुगतान (फाइनल सेटेलमेंट के कागजात) श्री शिव कुमार महाप्रबंधक/निर्माण के कर कमलों द्वारा प्रदान किये गये । साथ ही सभी सेवानिवृत्त कर्मचारियों को महाप्रबंधक/निर्माण द्वारा स्वर्ण जड़ित चांदी के पदक भी प्रदान किये गये । इस कार्यक्रम में महाप्रबंधक/निर्माण महोदय के साथ-साथ अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण तथा कार्यालय के कर्मचारी भी शामिल हुए ।

हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

कार्यशाला का एक दृश्य

संगठन के राजभाषा अनुभाग में दिनांक 19.06.09 को कर्मचारियों के लिए हिन्दी भाषा की एक कार्यशाला का आयोजन किया गया । उक्त कार्यशाला में हिन्दी शिक्षण योजना, गृह मंत्रालय, मालीगांव के प्राध्यापक श्री राजकुमार ने व्याख्यान प्रस्तुत किया । कार्यशाला में कुल 25 कर्मचारियों ने भाग लिया ।

स्वागत

1. श्री मदन सेन ने दिनांक 30.03.09 को मुख्य इंजीनियर/निर्माण-6 का पदभार ग्रहण किया ।

श्री मदन सेन का स्वागत करते हुए श्री शिव कुमार, महाप्रबंधक/नि.

2. श्री वी. के तिरकी ने दिनांक 04.05.09 को मुख्य इंजीनियर/निर्माण-5 का पदभार ग्रहण किया ।

श्री बी. के तिरकी का स्वागत करते हुए श्री शिव कुमार, महाप्रबंधक/नि.

3. श्री नवीन प्रकाश ने दिनांक 01.05.09 को उप मुख्य इंजीनियर/निर्माण/जोगीघोपा का पदभार ग्रहण किया ।

4. श्री वी. एम. निनावे ने दिनांक 29.05.09 को उप मुख्य सामग्री प्रबंधक /निर्माण का पदभार ग्रहण किया ।

पदस्थापना

1. श्री के. एल. मीणा, उप मुख्य इंजीनियर/नि/सिलापथार - 2 ने स्थानांतरण पर उप मुख्य इंजीनियर/नि/अभिकल्प-1/मालीगांव का पदभार ग्रहण किया।

2. श्री एस.पी. देशमुख, उप मुख्य इंजीनियर/नि/सिलचर-1 ने स्थानांतरण पर उप मुख्य इंजीनियर/नि/मालीगांव का पदभार ग्रहण किया।

3. श्री अजय प्रधान, महाप्रबंधक/निर्माण के सचिव ने स्थानांतरण पर उप मुख्य इंजीनियर/निर्माण/निविदा का पदभार ग्रहण किया ।

4. श्री सुनील सिंह, उप मुख्य इंजीनियर/निर्माण/जोगीघोपा ने स्थानांतरण पर महाप्रबंधक/निर्माण के सचिव का पदभार ग्रहण किया ।

स्थानांतरण

1. श्री ए.एस. गरूड़, मुख्य इंजीनियर/निर्माण-VI का दिनांक 13.03.09 पश्चिम रेलवे में स्थानांतरण हुआ ।

2. श्री ए. के. सिन्हा, सहायक कार्मिक अधिकारी/निर्माण का पदोन्नति पर पू. सी. रेलवे, मुख्यालय (ओपन लाइन) में वरिष्ठ सहायक उप महाप्रबंधक पद पर स्थानांतरण हुआ ।

3. श्री आर.एल मीणा, मुख्य इंजीनियर/निर्माण-V का दिनांक 18/19.03.09 को पू. सी. रेल (ओपन लाइन) में स्थानांतरण हुआ ।

4. श्री डी आर. टेम्भूर्ने, उप मुख्य इंजीनियर/नि/निविदा का दिनांक 03.04.09 को मध्य रेलवे में स्थानांतरण हुआ ।

5. श्री टी. वी. भूषण, उप मुख्य इंजीनियर/नि/अभिकल्प-I/ मालींगांव का दिनांक 21.04.09 को दक्षिण-पश्चिम रेलवे में स्थानांतरण हुआ।

6. श्री प्रदीप कुमार, उप मुख्य इंजीनियर/नि/सिलचर-I/ मालींगांव का दिनांक 24.04.09 को उत्तर-पश्चिम रेलवे में स्थानांतरण हुआ ।

7. श्री विनोद कुमार, उप मुख्य इंजीनियर/नि/रंगिया का दिनांक 14.05.09 को उत्तर रेलवे में स्थानांतरण हुआ ।

8. श्री एच. एस. राणा, उप मुख्य इंजीनियर/नि/मालीगांव का दिनांक 26.05.09 को उत्तर मध्य रेलवे में स्थानांतरण हुआ ।

9. श्री पी.के. साफी, उप मुख्य सामग्री प्रबंधक/निर्माण का दिनांक 29.05.09 को उत्तर रेलवे में स्थानांतरण हुआ।

उप मुख्य राजभाषा अधिकारी/नि. का नामन

उप मुख्य राजभाषा अधिकारी/निर्माण का स्वागत समारोह

श्री एस. वेहरा उप मुख्य कार्मिक अधिकरी/नि. का उप मुख्य राजभाषा अधिकारी/निर्माण का कार्यकाल दिनांक 05.05.09 को समाप्त हुआ तथा श्री अजय प्रधान, उप मुख्य इंजीनियर/ नि./ निविदा ने एक वर्ष के लिए उप मुराधि/नि. का पदभार ग्रहण किया।

राष्ट्रीय परियोजनाएं

जिरिबाम से तुपुल तक नई बड़ी लाइन (98 कि.मी.)

कुल सम्भव 97.9 कि. मी. लम्बाई में फाइनल लोकेशन सर्वे की संचयी प्रगति 72 कि. मी. रही। 0.00 कि.मी. से 20.5 कि.मी. एवं 63.606 से 97.9 भू- अधिग्रहण, भू-कार्य एवं छोटे पुलों के निर्माण में क्रमश: 766.35 हेक्टर में से 170.44 हेक्टर, 237.5 लाख क्यूबिक में से 60.48 लाख क्यूबिक मीटर भू-कार्य तथा 65 पुलों में से 12 की कार्य प्रगति हुई ।

बोगीबिल के निकट ब्रह्मपुत्र नदी के उत्तरी एवं दक्षिणी तट पर लिंक लाइन सहित रेल सह सड़क पुल

पुल के उत्तरी और दक्षिणी तट पर तटबन्धों, छोटे एवं बड़े पुलों, बोल्डर संग्रह, बांधों के उत्थान के निर्माण एवं मजबूतीकरण का कार्य प्रगतिरत है। परियोजना के लिए आवश्यक 505.94 में से 505.24 हेक्टेयर भूमि अधिग्रहित की जा चुकी है। दक्षिणी तट तथा उत्तरी तट पर कुल 298.78 लाख क्यूबिक मीटर में से 246.53 लाख क्यूबिक मीटर भू-कार्य, 71 कि. मी. में से 62.50 कि. मी. गठन, 19 अदद बड़े पुलों में से 18 उप संरचनाएँ एवं 13 अधिसंरचनाओं तथा 98 में से 90 छोटे पुलों, 15 में से 12 आर ओ बी/आर यू बी, 2.84 लाख क्यूबिक मीटर में से 1.92 लाख क्यूबिक मीटर गिट्टी आपूर्ति, 21.35 लाख क्यूबिक मीटर में से 20.67 लाख क्यूबिक मीटर बोल्डर आपूर्ति एवं 4 एम एम जी आई वायर साउरेज क्रेट की संचयी प्रगति हुई। मुख्य पुल के दक्षिणी तट पर पीयर पी 2, पी 3, पी 4, पी 5 एवं पी 6 की वेल फाउंडेशन कास्टिंग तथा सिंकिंग का कार्य प्रगति पर है एवं 5 वेल के लिए आवश्यक 293 आर एम कंक्रीटिंग तथा सिंकिंग में से 199.5 आर एम कंक्रीटिंग तथा 186.5 आर एम सिंकिंग की संचयी प्रगति हुई है । 30 क्यूबिक मीटर/घण्टा की क्षमता के दो बैचिंग प्लांट तथा दो क्रशर प्लांट कार्यस्थल पर कार्यरत हैं।

मुख्य पुल के उत्तरी तट पर पीयर पी 32 एवं पी 33 के वेल फाउंडेशन में आवश्यक 116 क्यूबिक मीटर कंक्रीटिंग एवं सिंकिंग में से 67 आर एम कंक्रीटिंग एवं 64 आर एम सिंकिंग किया गया।

आजरा से बरनीहाट तक (30 कि. मी.) नई बीजी लाइन

नवम्बर,07 से स्थानीय लोगों के विरोध के कारण अनुमोदित संरेखण के असम भाग में विस्तृत सर्वे का कार्य स्थागित है। राज्य सरकार से इस विषय के शीर्ष वरीयता के आधार पर शीघ्र समाधान हेतु सूचित किया गया एवं अनेक बैठकें आयोजित की गईं। भू वन्दोबस्त अधिकारी के साथ मिलकर आजरा छोर से 12.00 कि.मी. तक की सम्भावित भू-योजना तैयार कर ली गयी तथा राजपत्र में अधिसूचित करने के लिए एस डी ओ/कामरूप को सौंप दिया गया है । दिनांक 27-06-08 एवं 22-07-08 को क्रमश: राजपत्र अधिसूचना एवं समाचार पत्र में प्रकाशन जारी किया गया । भूमि अधिग्रहण अधिनियम के सेक्शन 5(1) के अधीन अभ्यावेदन आमंत्रण हेतु आगे की अधिसूचना जारी कर दी गयी एवं उसकी उपायुक्त/कामरूप द्वारा देख रेख की जा रही है । समस्या के समाधान हेतु उपायुक्त कामरूप (मेट्रो) के साथ भूमि अधिग्रहण एवं अधिसूचना हेतु सम्पर्क स्थापित किया जा रहा है जिससे कि असम भाग में सर्वे कार्य प्रारम्भ किया जा सके किन्तु राज्य सरकार द्वारा अब तक कोई समाधान नहीं निकाला गया है ।

दिमापुर से जुब्जा तक (88 कि.मी.) नई लाइन

0.00 कि.मी. से 40.00 कि.मी. तक फाईनल लोकेशन सर्वे का कार्य प्रगति पर है । कंक्रीट पीलरों द्वारा 3.5 कि.मी. एवं 11.0 से 15.0 कि. मी. तक सेंटर लाइन चिन्हित करने का काम पूरा किया गया । ग्रामिणों के विरोध के कारण 5.0 कि.मी. से 8.0 कि.मी. के बीच एफ एल एस कार्य को रोक दिया गया । दिनांक 6.2.09 को डिमापुर में यातायात विभाग नागालैंड सरकार के उपायुक्त, आयुक्त एवं सचिव के साथ समन्वय बैठक में इस विषय पर विचार-विमर्श किया गया । बैठक के कार्यवृत्त के अनुसार उपायुक्त दीमापुर ने मुद्दे के शीघ्र समाधान हेतु आयुक्त नागालैंड, कोहिमा को निर्दिष्ट किया है । जिला प्रशासन से सम्पर्क के बावजूद 5.00 से 8.00 कि. मी. तक की समस्या का समाधान नहीं निकला है जिसके लिए उप मुख्य इंजीनियर/नि./सर्वे द्वारा उपायुक्त एवं राजस्व अधिकारी के साथ दिनांक 29-03-09, 24-03-09, 25-03-09, 20-04-09, 27-04-09, 28-04-09, 20-05-09 तथा 26-05-09 को कई बैठकें आयोजित की गईं ।

अगरतला से सबरूम तक नई बीजी लाइन (110 कि.मी.)

अगरतला से उदयपुर तक फाइनल लोकेशन सर्वेक्षण का कार्य पूरा किया गया तथा अगरतला छोर से संरेखण के लगभग 80 कि. मी. भू-भाग को कंक्रीट पीलरों द्वारा घेर दिया गया है । माह के दौरान 38.00 हेक्टर (5.2 कि. मी.) भूमि को अधिग्रहित करने का प्रस्ताव राज्य सरकार को भेजा गया । दिनांक 20-02-09 को अगरतला से उदयपुर तक 44 कि. मी. के लिए कुल 376.03 करोड़ रूपये का आंशिक विस्तृत प्राक्कलन स्वीकृति हेतु रेलवे बोर्ड भेजा गया, रेलवे बोर्ड के दिनांक 09-03-09 के पर्यवेक्षण का अनुपालन कर दिनांक 27-03-09 को उत्तर रेलवे बोर्ड भेज दिया गया ।

भैरवी से साइरंग (51.38 कि.मी.) तक नई बड़ी लाइन ।

फाइनल लोकेशन सर्वे का फील्ड कार्य जो राज्य में चुनाव के कारण बन्द था, दिनांक 28-02-09 से चालू हो गया । 0.0 से 9.0 कि. मी. के बीच एफ एल एस कार्य प्रगति पर है । 0.00 से 6.50 कि.मी. के बीच आर-पार एवं समतलीकरण का कार्य पूरा किया गया । 0.00 से 3.60 कि. मी. के बीच स्थलाकृति पूरी की गई ।

रंगिया-मुकौंगसेलेक आमान परिवर्तन (510.33 कि.मी.)

सर्वप्रथम रंगिया-रंगापाड़ा नॉर्थ (123 कि.मी.) सेक्शन के लिए भू-कार्य एवं पुलों के लिए 75.75 करोड़ रूपये का आंशिक विस्तृत प्राक्कलन स्वीकृत किया गया । बाद में रेलवे बोर्ड द्वारा दिनांक 19-09-08 को सम्पूर्ण सेक्शन के शेष कार्य के लिए कुल 1480.96 करोड़ रूपये का भाग-III विस्तृत प्राक्कलन स्वीकृत किया गया । तद्नुसार रंगिया-रंगापाड़ा सेक्शन में भू-कार्य तथा पुलों के लिए ठेके प्रदान किये गये । कुल 12 लाख क्यूबिक मीटर में से 8.526 लाख क्यूबिक मीटर भू-कार्य, 272 छोटे पुलों में से 60 एवं 65 बड़े पुलों में से 24 की उप संरचना की संचयी प्रगति रही । रंगापाड़ा नॉर्थ से मुकौंगसेलेक तक सेक्शन के शेष कार्य के लिए भू-कार्य, छोटे एवं बड़े पुलों के निर्माण तथा गिट्टी आपूर्ति हेतु ठेके प्रदान किये जा रहे हैं ।

लमडिंग-सिलचर-जिरीबाम, बदरपुर से बराईग्राम एवं बराईग्राम से कुमारघाट (367.79 कि.मी.) का आमान परिवर्तन

विगत 10 अप्रैल 09 से यात्री एवं मालगाड़ियों पर उग्रवादियों द्वारा गोलीबारी एवं हमले की कई घटनाएँ हुई हैं जिसमें सुरक्षाकर्मी तथा रेलकर्मी एवं अन्य लोगों की मृत्यू के अलावा अनेक लोग घायल हुए। तथा मौत हुई जिसके कारण पहाड़ी सेक्शन में परिचालित गाड़ियों को कई दिनों तक स्थगित करना पड़ा । कानून एवं व्यवस्था की गम्भीर परिस्थिति से सभी कार्यों की प्रगति बुरी तरह से प्रभावित हुई है । अब तक कुल संचयी प्रगति 652.93 लाख क्यूबिक मीटर भू-कार्य में से 568.78 लाख क्यूबिक मीटर, 377.56 कि.मी. में से 300.32 कि.मी. का गठन, 10,675 मीटर में से 4592 मीटर सुरंग, 1222 मीटर में से 425 मीटर कट एंड कवर, मुख्य बड़े पुलों के 95 अदद में से 58 की उप संरचना और 130 अदद में से 40 की अधिसंरचना, 661 में से 574 छोटे पुलों, 9.07 लाख क्यूबिक मीटर में से 2.92 लाख क्यूबिक मीटर गिट्टी आपूर्ति एवं 379.98 कि.मी. ट्रैक लिंकिंग में से 28 कि.मी. ट्रैक लिंकिंग की संचयी प्रगति रही ।

2009-2010 का परिव्यय

2009-2010 का परिव्यय		
◆ रेलवे बाट (प्रथम चार माह के लिए)	=	306.96 करोड़ रूपये
◆ अतिरिक्त बाटीय सहयोग (प्रथम छ: माह के लिए)	=	479.78 करोड़ रूपये
◆ निक्षेप कार्य (रक्षा मंत्रालय)	=	2.78 करोड़ रूपये
कुल	=	789.52 करोड़ रूपये
खर्च 2009-2010		
◆ मई, 2009 के दौरान खर्च	=	108.42 करोड़ रूपये
	+	0.07 करोड़ रूपये (निक्षेप कार्य)
कुल	=	108.49 करोड़ रूपये
◆ मई, 2009 तक संचयी खर्च (लगभग)	=	243.27 करोड़ रूपये
	+	0.16 करोड़ रूपये (निक्षेप कार्य)
कुल	=	243.43 करोड़ रूपये
परिव्यय का खर्च (%)	=	30.83 %

यातायात सुविधा

	प्रगति	लक्ष्य
◆ कामाख्या स्टेशन में कोचिंग की सुविधा (फेस-II)	80 %	जून, 09

वर्कशॉप

	प्रगति	लक्ष्य
◆ न्यू गुवाहाटी डीजल शेड का विस्तार	85 %	जून, 09
◆ कामाख्या जं- कोच रख-रखाव के लिए उप डांचा का विकास	78 %	जून, 09
◆ किशनगंज-ट्रेन परीक्षण सुविधा	90 %	जून, 09
◆ न्यू जलपाईगुड़ी- कोच रख-रखाव की सुविधाएँ (सिक लाइन)	85 %	जून, 09
◆ न्यू बंगाईगांव- आर.सी.सी. बाउनडरि वॉल	66 %	जून, 09

वर्ष 2009-2010 की लक्ष्य निर्धारित परियोजनाओं की स्थिति

	प्रगति	प्रगति
◆ फकीराग्राम-धुबड़ी 66 कि.मी. (आमान परिवर्तन)	90 %	मार्च, 10
◆ हैबरगांव-मैराबाड़ी (44 कि.मी.) शाखा लाइन का पुन:स्थापन	95 %	जून, 09
◆ मालदा टाउन-ओल्ड मालदा (0.4 कि.मी. दोहरीकरण)	54.32 %	मार्च, 10
◆ न्यू गुवाहाटी-डिगारू (30 कि.मी. पैच दोहरीकरण)	38.80 %	मार्च, 10

सिगनल एवं दूरसंचार निर्माण कार्य

	प्रगति	लक्ष्य
◆ पानीतोला-डिब्रूगढ़ टाऊन : स्टन्डर्ड III पैनेल इन्टरलाकिंग तथा एम.ए.सी.एल द्वारा सिगनलों का पुन:स्थापन (राजधानी मार्ग, 5 स्टेशन) ।	पानीटोला से लाहोवाल तक 4 स्टेशनों में चालू किया गया ।	दिसम्बर 2009 (डिब्रूगढ़ टाऊन के लिए)
◆ बंगाईगांव-चांगसारी : पॉइन्ट्स तथा सिगनलों का केन्द्रीकृत परिचालन द्वारा भीतरी सिगनलिंग गियरों का पुन:स्थापन (इलेकट्रनिक इन्टरलॉकिंग) (14 स्टेशनों में)	(I) सरभोग, केन्दुकना, बायहाता, धघरापार, पाटीलादाहा, सरूपेटा, कोयलालकुवी, पाठशाला, बिजनी, यापराकाटा, बरपेटा रोड, नलबाड़ी तथा टिहु में क्रमश: दिनांक 24.02.07, 27.03.07, 04.04.07, 07.04.07, 16.06.07, 27.06.07, 13.06.08, 24.06.08, 29.06.08, 07.08.08, अगस्त 08, 29.09.08 एवं 28.11.08 को चालू किया गया। (II) रंगिया स्टेशन में कार्य प्रगतिरत है ।	30जून 2009
◆ लामडिंग मंडल : सिगनलिंग तथा टेलीकॉम गियरों का पेनेल इन्टरलॉकिंग द्वारा पुन:स्थापन (3 तीन केबीनों में)	लामडिंग में छोटी लाइन को बड़ी लाइन में परिवर्तन के कार्य लामडिंग में आमान परिवर्तन कार्य के साथ इस कार्य को निष्पादित करने का निर्णय लिया गया था । परन्तु ओपान लाइन ने इस कार्य को बन्द करने का सुझाव दिया है ।	31मार्च 2010

चालू सर्वेक्षण

क्रम सं	सर्वेक्षण का नाम	स्वीकृति वर्ष	राज्य	प्रगति	पूरा करने की लक्ष्य तिथि
1	जोगबनी (भारत) से विराटनगर (नेपाल) तक नई लाइन	2008-09	बिहार (भारत) व नेपाल	70 %	जून, 2009
2	सलोना से खुमताई तक नई लाइन नई लाइन का आर ई टी द्वारा सर्वेक्षण	2008-09	असम	100%	
3	न्यू माल जं. से मैनागुड़ी तक नई बड़ी लाइन	2008-09	पश्चिम बंगाल	50 %	सितम्बर, 2009
4	हासिमारा (पश्चिम बंगाल) से फुंत्सोलिंग (भूटान) तक नई लाइन	2004-05	भारत में पश्चिम बंगाल तथा भूटान	35%	सितम्बर, 2009

कहानी

दारोगा जी की मूँछें

- सीमा वाजपेयी

दारोगा रामाधीन बड़बड़ाते ही जा रहे थे। न जाने किस जन्म के कुकर्मों का फल यूं मिल रहा था। अब वो तो हर मंगल और शनि को बड़े हनुमान जी के मंदिर में प्रसाद लगाते हैं। भूल-चूक के लिए कान खींच कर क्षमा मांगते हैं। माता के अनन्य भक्त हैं। दोनों नवरात्र उपवास करते हैं। अब यदाकदा मांस मदिरा का सेवन कर लेते हैं लेकिन यो तो तभी न जब कोई मोटा मुर्गा फंसता है। अब इतनी सी भूल के लिए ईश्वर ऐसे निर्दयी तो नहीं हो सकते न। अब देखिए न, यही सुरेश जब पैदा हुआ था तो गुरू महाराज ने कहा था सूर्य के समान तेजस्वी होगा। दारोगा जी की फड़फड़ाती मूँछें और ऊँची हो गई थी। आसार भी अच्छे ही नजर आते थे। सुरेश कक्षा क्या विद्यालय का सबसे मेधावी छात्र था। बचपन से ही कविता और चित्रकारी में निपुण था। इसे आई ए एस बनाऊं या आई पी एस दारोगा जी यही सोचते। और राधारानी ? वो तो बलिहारि जातीं अपने इस लाडले सपूत पर। तो क्या यह राधारानी की ही शिक्षा का फल है ? अब दारोगा जी भी बेचारे क्या करते? कभी किसी बीहड़ इलाके में नियुक्ति होती तो कभी दूरदराज गांव में। सुरेश के लालन-पालन का जिम्मा तो दारोगाजी ने अपनी समझदार पढी-लिखी हाईस्कूल फेल पत्नी पर ही छोड़ दिया था। राधारानी ने भी कोई कोर कसर न उठा रखी थी। दारोगा जी जितनी ज्यादा से ज्यादा कमाई करते, राधारानी उतने ही घी से बनी पूड़ियां और बादाम का हलवा खिलाती अपने लल्ले को। तभी तो हाईस्कूल में पूरे गांव में सबसे ज्यादा अंक लाया था उनका लल्ला। और इंटर में तो जिले में सबसे अव्वल ठहरा। फिर तो विश्वविद्यालय ने भी सुवर्ण पदक से कम कभी कुछ देना मंजूर नहीं किया। पर सुरेश इस सम्मान से कुछ ज्यादा ही प्रभावित हो गया। विश्वविद्यालय छोड़ना ही नहीं चाहा फिर उसने। कहां दारोगाजी के सपने कि उनका बेटा बड़ी सी सफेद गाडी में चले आगे पीछे उनके जैसे कितने ही दारोगा और बड़े अफसर सल्यूट मारते चलें। और कहां विश्वविद्यालय का प्रवक्ता। राधारानी तो गांव में लड्डू बांट रही थी कि उनका लल्ला प्रोफेसर हो गया है और दारोगा जी मूंछें उमेठते सोच रहे थे कि खाली तनख्वाह से कभी किसी का भला हुआ है। न बंगला, न गाड़ी, न सरकारी नौकर चाकर, न जी हजूरी करते व्यापारी। अरे इससे तो उनका अपना रूतबा कितना ज्यादा है। एक डंडा दिखा दें तो सारा ट्रैफिक रूक जाए। ये प्रोफेसर अंग्रेजी में कितनी ही गिट पिट कर लें, पर दारोगा के डंडे के आगे कुछ न चलेगी।

खैर किसी तरह दारोगाजी ने अपने मन को तसल्ली दे दी थी। पर अब ? अब तो प्रोफेसर सुरेश विवाह करना चाहते हैं स्वतंत्रता संग्राम सेनानी आचार्य नवीन शर्मा की पौत्री से। दहेज की आशा तो पहले ही क्षीण थी पर अब तो वह भी समाप्त हो गयी है। वैशाली के पिता की सर्वोदयी पुस्तकों की दुकान है। सदा खादी का कुर्ता पैजामा ही पहनते हैं। खानपान में भी सदाचारी यानी शुद्ध शाकाहारी और निर्व्यसनी। मुश्किल तो ये है कि आचार्य नवीन शर्मा का नाम सुनते ही लोग नतमस्तक होने लगते हैं फिर भला रामाधीन अपने लाडले को क्या समझाएं। फिर अपने हृदय के टुकड़े के हृदय को चोट भी तो नहीं पहुँचाई जा सकती।

आज वो लोग यहां आ रहे हैं दारोगा जी से मिलने। उनके सामने अपने वैभव का प्रदर्शन भी तो नहीं किया जा सकता। अपनी काली कमाई का भेद खुल जाएगा। वैसे भी शर्मा जी के पास खानदानी सम्पत्ति बहुत है। दारोगाजी के वैभव से वह प्रभावित नहीं हो पाएंगे। अब तो अपनी सादगी और ईमानदारी का ढोल पीटना होगा। कुछ झूठे किस्से भी गढ़ने पड़ेंगे। और क्या किया जा सकता है ? हाँ अपना शास्त्रज्ञान दिखाने का अच्छा मौका है। आखिर उन्हें हनुमान चालीसा से लेकर दुर्गा सप्तशती तक कितना कुछ कंठस्थ है। तब ठीक है दारोगाजी ने निश्चय किया कि अपनी कार्यकुशलता, ईमानदारी और ज्ञान से ही वह उन लोगों पर प्रभाव डालेंगे हालांकि ये स्वयं अपने इन गुणों या कहना चाहिए उनके अभाव से जरा भी प्रभावित नहीं।

शर्मा जी के जाने के बाद दारोगाजी ने चैन की सांस ली। जैसा वे चाहते थे वैसा ही प्रभाव छोड़ने में सफलता जो मिली थी। रात भर राधारानी उनके खर्राटों से परेशान रहीं। बेटे के ब्याह के मीठे-मीठे सपने देखने का मौका ही नहीं मिला। सुबह से ही उनका मूड खराब था। बेचारे दारोगाजी का डंडा घर में कोई रूआब नहीं डालता। सुबह से तीन बार डांट खा चुके थे। चुपचाप जले पराठों का नाश्ता कर बिना चीनी का दूध पीया। क्या करें चीनी मांगने का साहस ही नहीं हुआ। पर असली आघात तो अभी बाकी था। थाने में पहुँचते ही तबादले का आदेश मेज पर प्रतीक्षा करता मिला। यह क्या। तबादला शर्मा जी के शहर में। एक ही क्षण में कल उनके साथ हुआ वार्तालाप मस्तिष्क में दोहरा गया। सारी काली कमाई ईमानदारी और कार्यकुशलता की वेदी पर होम होती दिखाई दे गई। सिर पकड़ कर बैठ गये रामाधीन, चन्द्रप्रकाश तो उनके लंगोटिया यार हैं। मामला भांपते ही समझाने लगे भई अभी तो ज्वाईन कर लो। दो चार दिन खूब ईमानदारी से सख्ती बरतो। इतनी कि वहां सभी परेशान हो जाएँ। फिर छुट्टी लेकर यहाँ आ जाना और बड़े साहब को खुश करना। ईश्वर ने चाहा तो अगले ही महीने फिर तबादला हो जाएगा। फिर क्या करना शर्मा जी का या ईमानदारी का ? रामाधीन को भी बात जंच गयी। उन मनगढ़न्त किस्सों को सच करने का समय आ गया था जिनकी चाशनी में उन्होंने शर्मा जी को खोया था। चलो ईश्वर जो करता है अच्छे के लिए करता है।

नये शहर में ट्रैफिक में नियुक्ति हो गई दारोगाजी की। सुनहरा मौका हाथ लगा था। पहले ही दिन इतने लोगों को धर लें कि शहर में हलचल मच जाए। अखबार में नाम छप जाए। यही सब कुछ सोच कर दारोगाजी कड़क वर्दी पहने, मूंछें उमेठ डंडा लहराते सड़क पर आ खड़े हुए। कहां से शुरू करें। चलो स्कूटर वालों के लाइसेंस चेक किए जाएँ। रिक्शा या साइकिल सवारों को धरने में अखबार में नाम नहीं छपेगा। बड़ी गाड़ियों वाले बड़े लोग उस अनजान शहर में उनके लिए मुसीबत बन सकते थे। स्कूटर वाले ही उन्हें उचित जंचे। आधे घंटे में तीस चालान। यानी हर मिनट में एक। दारोगाजी अपनी कार्यकुशलता पर मुग्ध हो गये। अब तो अखबार में हमारा नाम पढ़ेंगे शर्मा जी अबकी बार उस मुंछमुंडे को हमारी फहराती हुई मूंछों की कद्र करनी ही पड़ेगी।

सामने एक अठारह उन्नीस बरस का लड़का एकदम नया स्कूटर लिए खड़ा था। शायद अभी खरीद कर ही ला रहा था क्योंकि नम्बर तक नहीं था उस पर। तो क्या हुआ ? कागज तो पूरे होने ही चाहिए। ये क्या इंश्योरेंस नहीं है ? दारोगाजी मैं तो अभी शोरूम से ला रहा हूँ। कागज तो कल मिलेंगे। सड़क पर चलती गाड़ी का इंश्योरेंस तो होना ही चाहिए। दारोगाजी को अपनी बात में दम लगा। मगर वह युवक तो मानता ही नहीं। चलो गाड़ी थाने में जमा कर दें तो होश ठिकाने आ जाएंगे बच्चू के दारोगाजी ने सोचा। थाने पहुँचते ही लड़के के पिता लकदक कुर्ता पैजामा पहने आ पहुँचे दारोगाजी से स्कूटर छोड़ देने की अनुनय विनय करने लगे। अपने हृदय के टुकड़े की स्कूटर की अभिलाषा धूल में मिलती नजर आ रही थी। आखिर वहाँ एक से एक महंगी गाड़ियां कबाड़ हो गई दिख रही थीं। अगर स्कूटर भी थाने में जमा हो गया तो उसकी भी वही दशा होगी। थोड़ी देर में तो युवक के पिता हाथ-पाँव जोड़ने लगे। दारोगाजी पसीजना चाहते थे। क्या करें वरसों की आदत थी हथेली गर्म होते ही पसीज जाने की। हथेली जोर-जोर से खुजलाने लगी। दारोगाजी भूल गये कि यह शर्मा जी का शहर है। अखबार की खबर तो वह खैर बन ही चुके होंगे पर अब इन लकदक कुर्ते वालों का क्या करें। दारोगाजी हजार दो हजार में मामला निबट जाए तो बहुत मेहरबानी होगी। एक मजबूर पिता का कंठ प्रार्थना कर रहा था। दो हजार? रामाधीन ने तो कल्पना भी नहीं की थी। मुँह में पानी आ गया। मूँछें उमेठते हुए बोले ठीक है, ठीक है पहली भूल है इसलिए क्षमा कर रहा हूँ। आइन्दा अपने बेटे को समझा कर रखिएगा। मामला तुरत फुरत निपट गया। शाम हो गई थी। दारोगाजी प्रसन्नता से झूम रहे थे। पहला दिन शानदार गुजरा। आज तो जमकर दावत होगी। अकेले है तो क्या अकेले खाने में न मुर्ग मुसल्लम का स्वाद कम होता है न बढ़िया शराब का। भगवती को माथा टेक कर दारोगाजी दावत उड़ाने घर की ओर चल दिए। बोतल खुली, जाम भरा, गले से उड़ेलते ही कैसे आनन्द की प्राप्ति हुई। कई दिन बाद मिला था यह सुख। सामने प्लेट में मुर्ग मुसल्लम और कबाब सजे थे। चाँदनी में सहन में बैठे दारोगाजी गुनगुना रहे थे रंग जीवन में नया आयो रे.....। दरवाजा खटखटाया ? उंह....यहां कौन आएगा ? हवा होगी। रंग जीवन में नया.....। दारोगाजी का स्वर ऊँचा हो गया था। शराब का सुरूर छाने जो लगा था। मूंछें उमेठने का मजा तो सुरूर चढ़ने पर ही आता है। भाई कौन है ? भीतर आ जाओ। दरवाजा खुला है, दरोगाजी मस्ती में बोले। प्रणाम रामाधीन जी....आप यहाँ आ गये हैं यह जानकर दर्शन को चला आया.....सामने हाथ जोड़े वैशाली के पिता खड़े थे.....साथ में वही स्कूटर वाला युवक और उसी लकदक कुर्ते पैजामे में उसके पिता.....ये मेरे छोटे भाई प्रकाश और उनका पुत्र अर्पित है....दारोगाजी का एक हाथ मूंछ पर था और दूसरा बोतल पर। गुँह में रखे कबाब में हड्डी आ गयी थी शायद जो न निगलते बन रही थी न उगलते.....!!

लेख

सोलह श्रृंगार

- नव कुमार राय
राजभाषा सहायक

आदि काल से स्त्री-पुरूष एक दूसरे को अपनी ओर आकर्षित करने की चेष्टाएँ करते आये हैं । कालक्रम में ज्यों-ज्यों मनुष्य का सामाजिक विकास हुआ त्यों-त्यों उसने अपने जीवन शैली को भी समृद्ध किया । पुरूषों में जहाँ शारीरिक सौष्ठव और वीरता का आकर्षण स्त्रियों को मोहता है वहीं स्त्रियों में स्वयं को सजाने, संवारने का चलन बढ़ता गया । इसी क्रम में जब शास्त्रों का उद्‌भव होने लगा तो मनीषियों ने सजने-सँवरने की कला को भी युक्तिसंगत रूप में परिभाषित किया । नारी के लिए शास्त्रों में सोलह श्रृंगार निर्धारित किए गए हैं । प्राचीन ग्रंथों में वर्णित सोलह श्रृंगार, आदि काल से चली आ रही श्रृंगार परंपरा की समृद्धि को दर्शाते हैं जो इस प्रकार के है :-

स्नान : श्रृंगार का सर्वप्रथम क्रम स्नान से प्रारंभ होता है ।

वस्त्र : प्राचीन काल से ही शीत, ग्रीष्म से बचने के लिए मनुष्य ने वृक्षों के छाल व पशुओं की खाल से अपना तन ढकना शुरू कर दिया था। कालान्तर में सभ्यता के विकास के साथ-साथ वस्त्रों में भी वरीयता आ गई । वस्त्रों को विभिन्न रंगों से, विभिन्न वस्तुओं से सजाया भी जाने लगा । वस्त्रों का पहनना मात्र ही उसकी मर्यादा को रेखांकित करता है जो सलीके से शरीरांगों का भाव प्रदर्शन भी है ।

हार : हार पहनने के पीछे वास्तव में स्वास्थ्यगत कारण हैं । गले और इसके नजदीकी क्षेत्र में ऐसे प्रैशर विंदु होते हैं, जिनसे शरीर के कई हिस्सों को लाभ प्राप्त होता है । इसीलिए हार को सौंदर्य का दर्जा दे दिया गया और हार श्रृंगार का अभिन्न अंग बन गया ।

बिंदी : मस्तक सौंदर्य हेतु बिंदी का महत्वपूर्ण स्थान माना जाता है । इसे सौभाग्य का प्रतीक कहा जाता है । शास्त्रों के ज्ञाताओं ने बिंदी लगाने के पीछे कई शास्त्रीय तर्क दिए हैं ।

अंजन : आँखों को सुंदर बनाने के लिए व आँखों की सुरक्षा के दृष्टिकोण से अंजन (काजल) का प्रयोग किया जाता है । अंजन का प्रयोग बुरी नजर से बचने के लिए भी किया जाता है ।

अधरंजन : होंठों या अधरों की सुंदरता बढ़ाने हेतु उन्हें कई रंगों से रंगा जाता है । प्राचीन काल में फूलों के रसों द्वारा यह कार्य संपन्न किया जाता था ।

नथ या नथनी : नाक को शोभामय बनाने के लिए नाक में छेद करके कई प्रकार की नथ पहनी जाती है । सौंदर्य वृद्धि के साथ-साथ मुख से संबंधित बिन्दुओं के द्वारा मुख सौंदर्य बनाए रखने में नथ सहयोग देती है ।

केश सज्जा : मुख की आभा बढ़ाने में केशों का महत्वपूर्ण योगदान होता है । केशों को सुगन्धित तेलों से सराबोर करके उन्हें विभिन्न आकारों में सजाना, श्रृंगार को बढ़ा देता है ।

कंचुकी : प्राचीन काल में स्त्रियों में प्राय: दो तरह के वस्त्र पहनने की प्रथा थी । अधोवस्त्र तथा उत्तरीय । अधोवस्त्र में कंचुकी को पहना जाता था ।

उबटन : प्राचीन काल में विभिन्न प्रकार के फूलों तथा जड़ी-बूटियों से तैयार विशेष प्रकार के उबटन प्रयोग में लाए जाते थे, जो त्वचा को स्निग्ध और कोमल बनाए रखते थे ।

पैंजनिया : पैरों की शोभा के लिए पैंजनियों का प्रयोग होता है । मधुर स्वर के साथ इससे चाल में मादकता का आभास होता है ।

इत्र : सोलह श्रृंगार में इत्र का महत्वपूर्ण स्थान है । इसमें उत्तेजना फैलाने से लेकर आकर्षित करने तक के गुण पाए जाते हैं । प्राचीन काल में फूलों के अर्क से इत्र बनाया जाता था ।

कंगन : कलाईयों के सौंदर्य और सौभाग्य का प्रतीक कंगन, अधिकांश स्त्रियों द्वारा धारण किया जाता है । कंगन का प्राचीन शास्त्रों में काफी वर्णन मिलता है ।

कमरबंध : कमर को सौंदर्यवान बनाने के लिए कमरबंध का प्रयोग किया जाता है । इसे सोने, चाँदी के साथ हीरे, मोती जड़कर विभिन्न आकारों में बनाया जाता है ।

चरणराग : पैर व हाथों की हथेलियों की सौंदर्य वृद्धि तथा त्वचा की सुरक्षा के लिए मेहंदी लगाने की परम्परा है ।

दर्पण : संपूर्ण सौंदर्य को निहारने के लिए दर्पण को भी सोलह श्रृंगारों में विशेष दर्जा प्राप्त है । सौंदर्य में कोई कमी न रह जाए, इसलिए दर्पण का प्रयोग जरूरी है ।

इन सोलह श्रृंगारों के बावजूद भी अगर एक स्त्री के चेहरे पर शालीनता भरी मुस्कराहट न हो तो इन श्रृंगारों का कोई मूल्य नहीं रह जाता । अत: इन श्रृंगारों को परिपूर्ण करने वाली सबसे महत्वपूर्ण है -एक मीठी मुस्कान ।

कविता

नारी

- श्रीमती गायत्री गिलि
राजभाषा सहायक

आ सकोगे क्या
तुम अपनी परिधि से
निकलकर... .. .. ?
रहना इरी समाज में
बंधन तोड़ पाओगे
आ सकोगे क्या
तुम अपनी परिधि से
निकलकर... .. .. ?

मैं ने भी उकेरी थी
अपने जीवन की कहानी
थे संजोएँ कई सपने
पर न समझे ये पुरूषजन
मैं तो हूँ सामान्य नारी

आगे आओ बाहर निकलो
और दिखा दो अपना बल
उनको ये एहसास हो कि
हम है जननी उनका कल
हमसे रोशन उनका जीवन
हममें है शक्ति असीम ।

बधाई/शुभकामनाएं

अधिकारियों को जन्म दिवस पर हार्दिक बधाई

01 जुलाई, श्री पी. के. डेका, उप वि. स. एवं मु ले. अधि./नि.-III
02 जुलाई, श्री आर. कालवन्दे, उप मु.ई./नि.-II/लाडिंगम
05 जुलाई, श्री सुशील कुमार, उप मु.ई./नि.अलीपुरद्वार
07 जुलाई, श्री एफ.एस. मीणा, उप मु.ई./नि.-II/लामडिंग
08 जुलाई, श्री टी.टी. भूटिया, उप मु.ई./नि.-II/सिलापथार
09 जुलाई, श्री के.एल. मीणा, उप मु.ई./नि/अभिकल्प-I
13 जुलाई, श्री शिव कुमार, महाप्रबंधक/निर्माण
15 जुलाई, श्री श्याम सुन्दर कालरा, मुख्य इंजीनियर/निर्माण-III
31 जुलाई, श्री एस. पी. देशमुख, उप मु.ई./निर्माण/मालीगांव
04 अगस्त, श्री पी. एस. अलवा, उप मु. सि. एवं दूर स.इंजी./नि.
13 अगस्त, श्री एम.बी डकाटे, उप मु.ई./नि/सिलचर-III
14 अगस्त, श्री बंस बहादुर, मु.सिगनल एवं दूर संचार इंजी./नि.-I
19 अगस्त, श्री आनन्द प्रकाश, मुख्य इंजीनियर/निर्माण-I
21 अगस्त, श्री टी.पी.आर. नारायण राव, मुख्य इंजी./नि.-VII
23 अगस्त, श्री एम.वी. प्रसाद, उप मुं.ई./नि.-II/डीबीआरटी-III
30 अगस्त, श्री सी. संजय, उमु.सि. एवं दूर सं. इंजी./नि.एनजीपी
01 सितम्बर, श्री एच. सी. सेनापति, उप मु.ई./निर्माण/डब्ल्यू
20 सितम्बर, श्री डी.आर. बोरा, उप वि.स. एवं मुलेधि/निर्माण-I

अधिकारियों को विवाह वर्षगांठ पर हार्दिक बधाई

07 जुलाई, श्री के.वी. वाईपेई, वि. स. एवं मुख्य लेखा अधि./नि.
12 जुलाई, श्री एस. पी. सिंह, उप मुख्य इंजी./नि./अभिकल्प-II
15 अगस्त, श्री गोपाल सरकार, उप मु.ई./नि/रंगिया

शब्द-ज्ञान

feasibility	साध्यता
feed back	पुनर्भरण, प्रतिपुष्टि
fiscal	राजकोषीय
fixation of pay	वेतन नियतन
fluctuation	उतार-चढ़ाव
forthwith	तत्काल
forbid	वर्जित, निषेधकरना
forged	जाली
financier	वित्तपोषक
first half	पूर्वार्ध

श्रद्धांजलि

श्री कालिदास आचार्जी, रिकार्ड सर्टर/निर्माण का दिनांक 15.05.2009 को देहावसान हो गया । उनकी आत्मा की शांति के लिए संगठन में एक शोक सभा का आयोजन कर 2 मिनट का मौन रखा गया ।

सेनचुवा-सिलघाट टाउन सेक्शन में यात्री सेवा चालू

दिनांक 15.04.09 से सेनचुवा-सिलघाट टाउन सेक्शन को पुन:स्थापन करके (62 कि.मी.)यात्री सेवा के लिए चालू किया गया। इस सेक्शन में गुवाहाटी से सिलघाट टाउन तथा वापसी के लिए एक जोड़ी गाड़ी का परिचालन शुरू किया गया है ।

हैबरगांव-मैराबाड़ी सेक्शन में ट्रैक लिंकिंग कार्य सम्पूर्ण

हैबरगांव-मैराबाड़ी सेक्शन (44 कि.मी.) को पुन:स्थापन करने के लिए पुलों तथा ट्रैक लिंकिंग का कार्य पूरा किया गया । दिनांक 29.04.09 को समूचे सेक्शन में मालगाड़ी का परिचालन किया गया । हैबरगांव में यार्ड का विस्तार ओपन लाईन द्वारा किया जा रहा है। इसके पूरा होते ही इस सेक्शन को खोलने की कार्यवाही पूरी की जाएगी ।